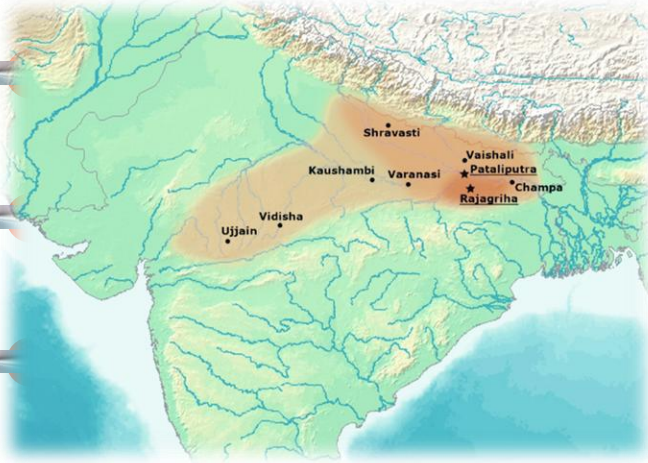


Ancient Dynasties **प्राचीन राजवंश**



The Magadha Empire (684 B.C - 320 B.C)



Haryanaka dynasty
(544 BC to 412 BC)



Shisunaga dynasty
(412 BC to 344 BC)



Nanda dynasty
(344 BC-322 BC)

- The Magadha Empire is mentioned in the two great epics **Ramayana and Mahabharata**/ मगध साम्राज्य का उल्लेख दो महान महाकाव्यों रामायण और महाभारत में मिलता है

Haryaka Dynasty (Bimbisara (558 BC – 491 BC))

- Son of Bhattiya. / भट्टिया का पुत्र
- A Jain King / एक जैन राजा
- He was Contemporary and follower of the Buddha. / वह बुद्ध के समकालीन और अनुयायी थे।
- Capital - Girivraja (Rajgir). / राजधानी - गिरिव्रज (राजगृह)।
- Strategy - Matrimonial alliances / नीति - वैवाहिक संबंध
- He was the first king to have a standing army. / वह स्थायी सेना रखने वाले पहले राजा थे।



Haryaka Dynasty (Bimbisara (558 BC – 491 BC))

- **Three wives - / तीन पत्नियाँ -**
 - Kosaladevi / कोसलादेवी
 - Chellana (daughter of the Lichchavi chief of Vaisali) / चेल्लना (वैशाली के लिच्छवि प्रमुख की पुत्री)
 - Khema (daughter of the king of Punjab) / खेमा (पंजाब के राजा की पुत्री)
- **The officers occupying high posts were divided into three – executive, military and judicial. /**
उच्च पदों पर आसीन अधिकारियों को तीन भागों में विभाजित किया गया था – कार्यकारी, सैन्य और न्यायिक।



Ajatasatru (492 BC - 460 BC)

- **He killed his father & succeeded throne. /** उसने अपने पिता की हत्या की और सिंहासन प्राप्त किया।
- **Son of Bimbisara & Chellana. /** बिम्बिसार और चेल्लना का पुत्र।
- **Led First Buddhist Council at Rajagriha just after the death of Buddha in 483 BC. / 483**
ईसा पूर्व में बुद्ध की मृत्यु के ठीक बाद राजगृह में पहली बौद्ध परिषद का नेतृत्व किया
- **He has won Vaishali. /** उसने वैशाली पर विजय प्राप्त की।



Udayin (460 BC - 440 BC)

- **Ajatshatru was succeeded by his son Udayin.** / अजातशत्रु के बाद उसके पुत्र उदयिन ने शासन किया।
- **He was instrumental in laying the foundations of the Patliputra and shifted the capital from Rajgriha to Patliputra.** / उसने पाटलिपुत्र की नींव डाली और राजधानी को राजगृह से पाटलिपुत्र स्थानांतरित किया।



Udayin (460 BC - 440 BC)



- **Naga-Dasak was the last ruler of Haryanka dynasty.** / नागदशक हर्यक वंश का अंतिम शासक था।
- **He was found unworthy to rule by the people and was forced to abdicate his throne in favour of his minister Shisunaga.** / जनता ने उसे शासन के योग्य नहीं पाया और उसे अपने मंत्री शिशुनाग के पक्ष में सिंहासन त्यागने के लिए विवश किया।

Sisunaga Dynasty (412 BC to 344 BC)

- Capital – Girivraj (Rajgir) /
राजधानी – गिरिव्रज (राजगृह)
- During Shisunaga's rule, the Avanti kingdom was conquered and annexed into the Magadh empire. /
शिशुनाग के शासनकाल में अवंति राज्य पर
विजय प्राप्त कर उसे मगध साम्राज्य में मिला
लिया गया।



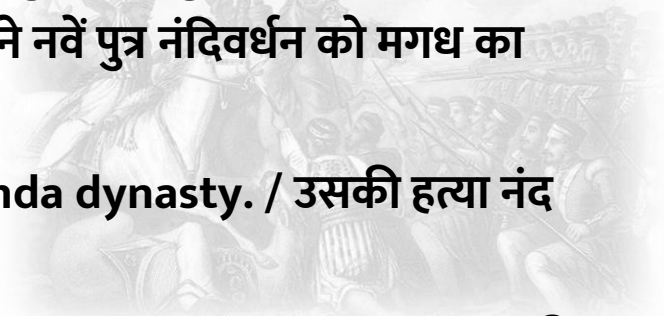
Sisunaga Dynasty (412 BC to 344 BC)



- Shishunaga was succeeded by Kalashoka. / शिशुनाग के बाद उसका उत्तराधिकारी कालाशोक बना।
- He convened the second Buddhist Council in Vaishali in 383 BC. / उसने 383 ईसा पूर्व वैशाली में द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन किया।
- After some time he shifted the capital to Vaishali. / कुछ समय बाद उसने राजधानी को वैशाली स्थानांतरित कर दिया।

Kalasoka (395 –367 BC)

- He divided his kingdom between his ten sons and crowned his ninth son, Nandivardhana as the king of Magadha. / उसने अपने राज्य को अपने दस पुत्रों में बाँट दिया और अपने नवें पुत्र नंदिवर्धन को मगध का राजा बनाया।
- He was killed by the founder of Nanda dynasty. / उसकी हत्या नंद वंश के संस्थापक द्वारा की गई।
- With his death the Shishunaga dynasty came to an end. / उसकी मृत्यु के साथ ही शिशुनाग वंश का अंत हो गया।



1. Who was the founder of the Shishunaga dynasty?
शिशुनाग वंश का संस्थापक कौन था?

Answer / उत्तर –

King Shishunaga was the founder of the Shishunaga dynasty. / राजा शिशुनाग शिशुनाग वंश के संस्थापक थे।

2. Who was the last ruler of the Shishunaga dynasty? शिशुनाग वंश का अंतिम शासक कौन था?

Answer / उत्तर –

Nandivardhana is considered the last king of the Shishunaga dynasty. / नंदीवर्धन को शिशुनाग वंश का अंतिम राजा माना जाता है।

3. What was the capital of the Shishunaga dynasty?

शिशुनाग वंश की राजधानी क्या थी?

Answer / उत्तर –

At different times, the capitals were Girivraj, Vaishali, and Pataliputra. / शिशुनाग वंश की राजधानी अलग-अलग समय में गिरिव्रज, वैशाली और पाटलिपुत्र रही।

4. Kalashoka belonged to which dynasty?

कालाशोक किस वंश का था?

Answer / उत्तर –

Kalashoka belonged to the Shishunaga dynasty. / कालाशोक शिशुनाग वंश का था।

5. When was the Shishunaga dynasty founded?

शिशुनाग वंश की स्थापना कब हुई?

Answer / उत्तर –

The Shishunaga dynasty was founded in 413 BC. /
शिशुनाग वंश की स्थापना 413 ईसा पूर्व हुई थी।

6. What was the duration of the Shishunaga dynasty?

शिशुनाग वंश का कार्यकाल क्या रहा?

Answer / उत्तर –

From 413 BC to 345 BC. / 413
ईसा पूर्व से 345 ईसा पूर्व तक माना
जाता है।

7. From when to when did the Shishunaga dynasty rule?

शिशुनाग वंश कब से कब तक रहा?

Answer / उत्तर –

413 BC to 345 BC. / 413 ईसा पूर्व से 345 ईसा पूर्व तक।

8. Who was Nandivardhana? / नंदिवर्धन कौन था?

Answer / उत्तर –

He was the last ruler of the Shishunaga dynasty. / शिशुनाग वंश का अंतिम शासक था।

Nand Dynasty (344 BC-322 BC)

- Founder – Mahapadmananda
- This was the first Non-Kshatriya dynasty. / यह पहला गैर-क्षत्रिय वंश था।
- He murdered Kalashoka to become the king. / उसने राजा बनने के लिए कालाशोक की हत्या की।
- As per the Puranas, he was the son of the last Shishunaga king from a Shudra woman. / पुराणों के अनुसार, वह अंतिम शिशुनाग शासक और एक शूद्र स्त्री का पुत्र था।



Nand Dynasty (344 BC-322 BC)

- As per some Jain texts and Greek writer Curtius, he was the son of a barber. / कुछ जैन ग्रंथों और यूनानी लेखक कर्टियस के अनुसार, वह एक नाई का पुत्र था।
- He is also known as “Sarva Kshatriyantaka” (destroyer of all the Kshatriyas) and “Ektrat”, Ugrasena (Owner of a huge army). / वह “सर्वक्षत्रियंतक” (सभी क्षत्रियों का संहारक), “एकरत” और “उग्रसेन” (विशाल सेना का स्वामी) के नाम से भी प्रसिद्ध था।
- He conquered many kingdoms including Kalinga. / उसने कई राज्यों को जीता, जिनमें कलिंग भी शामिल था।

Dhana Nanda (329 –321 BCE)

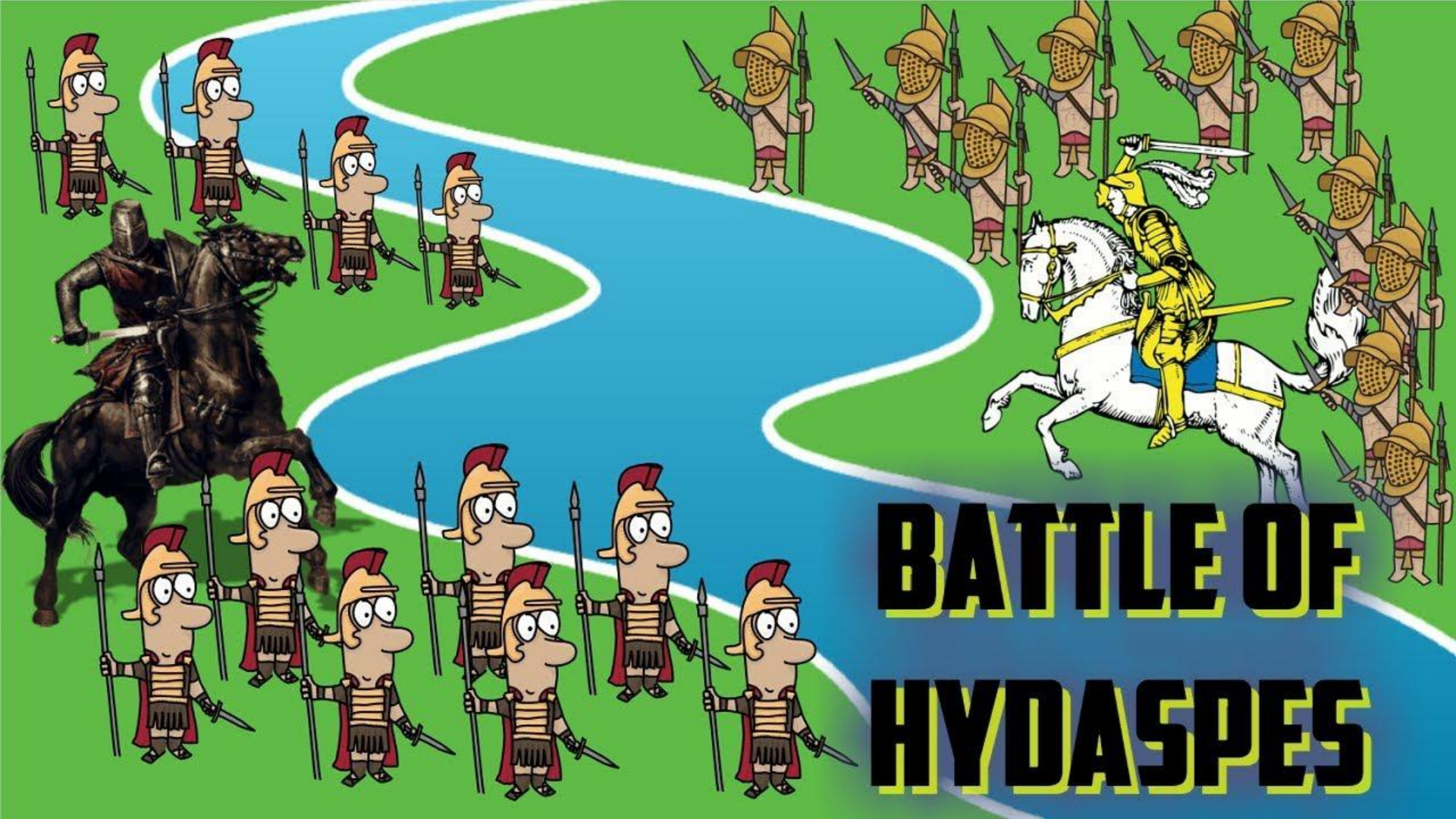
- Dhana Nanda, according to the Buddhist text Mahabodhivamsa, was the last ruler of the Nanda dynasty of ancient India. / बौद्ध ग्रंथ महाबोधिवंश के अनुसार धनानंद प्राचीन भारत में नंद वंश का अंतिम शासक था।
- He was the youngest of the eight brothers of the dynasty's founder. / वह वंश के संस्थापक के आठ भाइयों में सबसे छोटा था।



Dhana Nanda (329 –321 BCE)

- Name – Agrammes or Xandrames in Greek texts. /
नाम – यूनानी ग्रंथों में अग्रेम्मेस या जैड्रेमेस।
- 99 crore Gold coins. / 99 करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ।
- Chandragupta Maurya along with Chanakya, which
led to the foundations of the Maurya Empire in
Magadha. / चन्द्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य के साथ मिलकर मगध में
मौर्य साम्राज्य की नींव डाली।





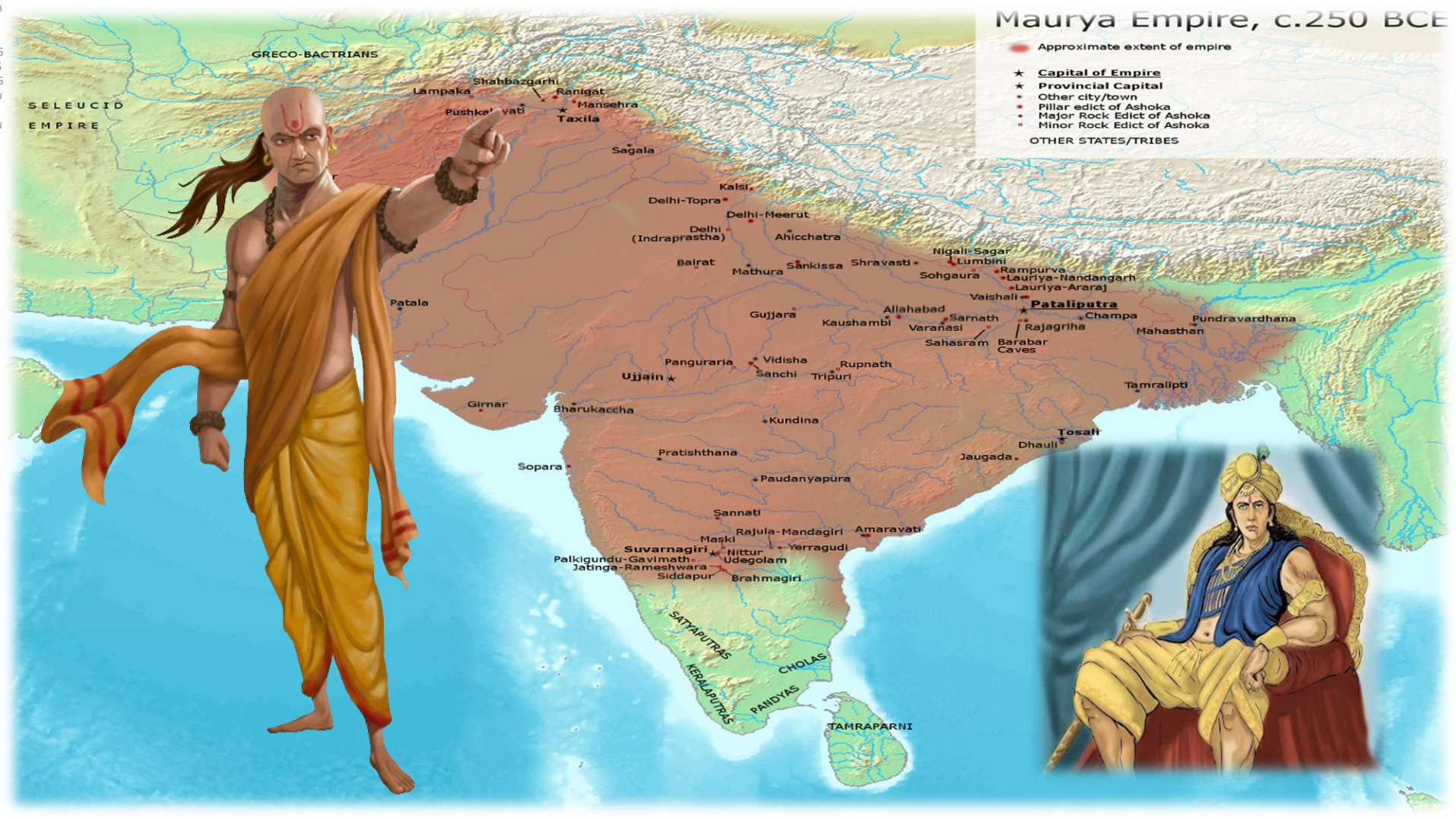
BATTLE OF HYDASPES



Maurya Empire, c.250 BCE

Approximate extent of empire

- ★ Capital of Empire
 - ★ Provincial Capital
 - Other city/town
 - Pillar edict of Ashoka
 - Major Rock Edict of Ashoka
 - Minor Rock Edict of Ashoka
- OTHER STATES/TRIBES



Maurya Empire



We know from:

- Kautilya's Arthashastra
- Visakadatta's Mudrarakshasa
- Megasthenes' Indica
- Edicts of Asoka
- Apart from these, the Puranas and the Buddhist literature such as Jatakas provide information on the Mauryas. / इनके अतिरिक्त, पुराण और बौद्ध साहित्य जैसे जातक कथाएँ भी मौर्यों के बारे में जानकारी प्रदान करती हैं।

Maurya Empire

- Chandragupta Maurya (322 – 298 B.C.)
- Bindusara (297 – 273 B.C.)
- Ashoka (268 – 232 B.C.)



Chandragupta Maurya (322 – 298 B.C.)

- Chandragupta Maurya founded the Mauryan Empire with the help of Chanakya. / चन्द्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य की सहायता से मौर्य साम्राज्य की स्थापना की।
- He defeated Dhana Nanda and ended the dynasty of Nandas. / उसने धनानंद को पराजित कर नंद वंश का अंत किया।
- He unified the Indian subcontinent and established a strong empire. / उसने भारतीय उपमहाद्वीप को एकीकृत कर एक सशक्त साम्राज्य की स्थापना की।

Chandragupta Maurya (322 – 298 B.C.)

- In 305 BC, he marched against Seleucus Nicator and defeated him. / 305 ईसा पूर्व में उसने सेल्युकस निकेटर पर आक्रमण किया और उसे पराजित किया।
- Seleucus gave Chandragupta eastern Afghanistan, Baluchistan & area west of Indus, and in return Chandragupta gifted 500 elephants to Seleucus and married his daughter. / सेल्युकस ने चन्द्रगुप्त को पूर्वी अफगानिस्तान, बलूचिस्तान और सिंधु नदी के पश्चिम का क्षेत्र दिया, बदले में चन्द्रगुप्त ने उसे 500 हाथी भेंट किए और उसकी पुत्री से विवाह किया।

Chandragupta Maurya (322 – 298 B.C.)

- Megasthenes was sent to Mauryan court as a Greek ambassador. / मेगास्थनीज़ को मौर्य दरबार में यूनानी राजदूत के रूप में भेजा गया।
- He accepted Jainism at the end of his life. / जीवन के अंतिम समय में उसने जैन धर्म को स्वीकार किया।
- Greek writer Justin called Chandragupta “Sandrocottus”. / यूनानी लेखक जस्टिन ने चन्द्रगुप्त को “सैंड्रोकोटस” कहा।

Bindusara
(297 – 273 B.C.)



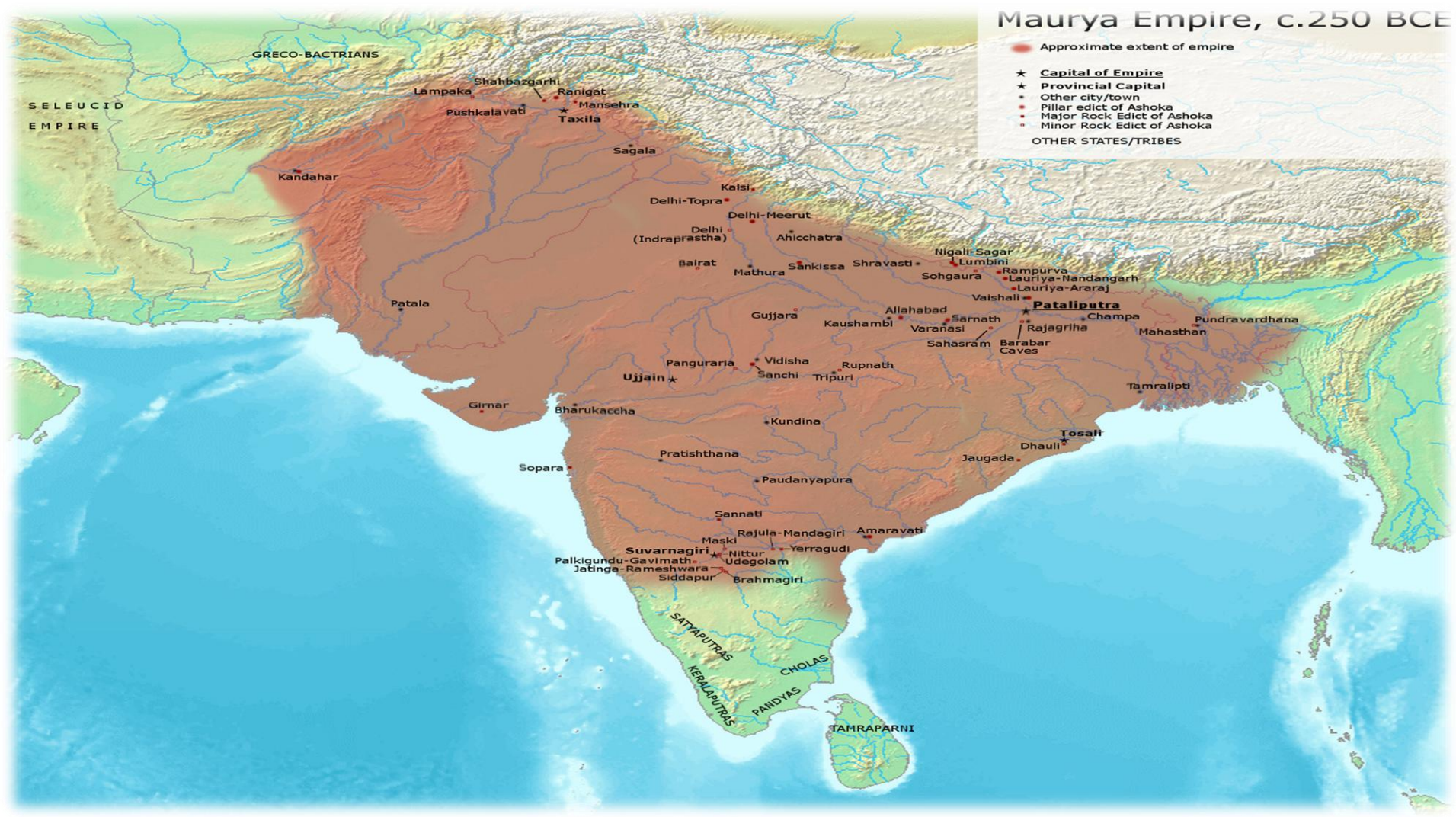
- **He was son of Chandragupta. / वह चन्द्रगुप्त का पुत्र था।**
- **Also called Amitraghata (Slayer of foes) or Amitrochates in Greek sources. / उसे 'अमित्रघात' (शत्रुओं का संहारक) भी कहा जाता था और यूनानी ग्रंथों में 'अमित्रोखेट्स' के नाम से उल्लेखित है।**
- **He had appointed his son, Ashoka as the governor of Ujjain. / उसने अपने पुत्र अशोक को उज्जैन का राज्यपाल नियुक्त किया था।**

Bindusara **(297 – 273 B.C.)**



- **He conquered Deccan up to Mysore. /** उसने दक्कन पर विजय प्राप्त कर मैसूर तक अपना साम्राज्य फैलाया।
- **Nicator's successor Antiochus I replaced Megasthenes with Deimachus as a Greek ambassador at Mauryan court. /** निकेटर के उत्तराधिकारी एंटीओकस प्रथम ने मौर्य दरबार में यूनानी राजदूत के रूप में मेगास्थनीज़ की जगह डाइमैकस को भेजा।

Maurya Empire, c.250 BCE



Ashoka (268 – 232 B.C.)



- He was the son of Bindusara. / वह बिंदुसार का पुत्र था।
- He included almost the entire Indian subcontinent in the Maurya empire. / उसने लगभग पूरे भारतीय उपमहाद्वीप को मौर्य साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया।
- The most important event of Ashoka's reign was his victorious war with Kalinga in 261 B.C. / अशोक के शासनकाल की सबसे महत्वपूर्ण घटना 261 ईसा पूर्व कलिंग युद्ध में उसकी विजय थी।

Ashoka (268 – 232 B.C.)



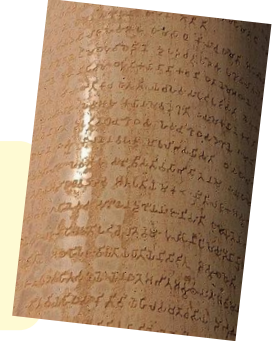
- He won the war of Kalinga. It was the turning point of his life. / उसने कलिंग युद्ध जीता, जो उसके जीवन का निर्णायक मोड़ बना।
- After watching the mass death in the war, he accepted Buddhism and decided to end war. / युद्ध में हुए भारी नरसंहार को देखकर उसने बौद्ध धर्म स्वीकार किया और युद्ध समाप्त करने का निर्णय लिया।

Ashoka (268 – 232 B.C.)



- He fought the battle of Kalinga after eight years of his coronation./उन्होंने अपने राज्या भषेक के आठ साल बाद क लंग का युद्ध लड़ा
- After the fall of Nanda dynasty it was necessary to take control over the Kalinga for trade and commerce./ नंद वंश के पतन के बाद व्यापार और वाणज्य के लिए क लंग पर नियंत्रण करना आवश्यक था

Ashoka (268 – 232 B.C.)



- Ashoka's 13th Rock Edict describes the Kalinga war vividly. / अशोक के तेरहवें शिलालेख में कलिंग युद्ध का विस्तृत वर्णन है।
- He appointed Dharma Mahapatra to spread Buddhism. / उसे बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु धर्म महामात्र नियुक्त किया गया।
- Ashoka embraced Buddhism under the influence of Buddhist monk, Upagupta. / अशोक ने बौद्ध भिक्षु उपगुप्त के प्रभाव में आकर बौद्ध धर्म स्वीकार किया।



Ashoka (268 – 232 B.C.)



- He built Ashok Stambhs to promote Buddhism. / उसने बौद्ध धर्म के प्रचार हेतु अशोक स्तंभों का निर्माण कराया।
- Famous Sanchi Stupa & Sarnath Pillar constitute Ashoka's reign. / प्रसिद्ध साँची स्तूप और सारनाथ स्तंभ अशोक के शासनकाल से संबंधित हैं।

Kalinga War (261 BC)

The Kalinga War was fought in what is now India between the Maurya Empire under Ashoka and the state of Kalinga, an independent feudal kingdom located on the east coast, in the present-day state of Odisha and north parts of Andhra Pradesh.

कलिंग युद्ध भारत में अशोक के नेतृत्व वाले मौर्य साम्राज्य और कलिंग राज्य (एक स्वतंत्र सामंती राज्य) के बीच लड़ा गया था, जो पूर्वी तट पर वर्तमान ओडिशा राज्य और आंध्र प्रदेश के उत्तरी भागों में स्थित था।





Shunga dynasty (187 to 78 BCE)

- Pushyamitra Sunga
- Agnimitra
- Vasumitra
- Devabhuti



Pushyamitra Sunga (187-151 BC)



- Pushyamitra Sunga was Brahmin army chief of Brihadratha, the last king of the Mauryas. / पुष्यमित्र शुंग मौर्य वंश के अंतिम राजा बृहद्रथ का ब्राह्मण सेनापति था।
- During a military parade, he killed Brihadratha and established himself on the throne in 185 or 186 BC. / एक सैन्य परेड के दौरान उसने बृहद्रथ की हत्या कर 185 या 186 ईसा पूर्व में स्वयं को राजा घोषित किया।
- According to some historians, this was an internal revolt against the last Mauryan king. / कुछ इतिहासकारों के अनुसार यह अंतिम मौर्य राजा के विरुद्ध आंतरिक विद्रोह था।

Pushyamitra Sunga (187-151 BC)



- Some say it was a Brahminical reaction to the Mauryan overwhelming patronage of Buddhism. / कुछ का मानना है कि यह मौर्यों द्वारा बौद्ध धर्म को मिले अत्यधिक संरक्षण के विरुद्ध ब्राह्मणवादी प्रतिक्रिया थी।
- Pushyamitra Sunga's capital was Pataliputra. / पुष्यमित्र शुंग की राजधानी पाटलिपुत्र थी।
- He successfully countered attacks from two Greek kings namely, Menander and Demetrius. / उसने यूनानी शासकों मेनांडर और डेमेट्रियस के आक्रमणों का सफलतापूर्वक प्रतिरोध किया।

Pushyamitra Sunga (187-151 BC)



- He conquered Vidarbha. / उसने विदर्भ पर विजय प्राप्त की।
- During his reign, the Stupas at Sanchi and Barhut were renovated. He built the sculptured stone gateway at Sanchi. / उसके शासनकाल में साँची और भरहुत के स्तूपों का जीर्णोद्धार हुआ। उसने साँची में शिल्पयुक्त पत्थर का द्वार बनवाया।
- He performed Vedic sacrifices such as Ashvamedha, Rajasuya and Vajapeya. / उसने अश्वमेध, राजसूय और वाजपेय जैसे वैदिक यज्ञ किए।

Pushyamitra Sunga (187-151 BC)



- Pushyamitra Sunga patronised the Sanskrit grammarian Patanjali. / पुष्यमित्र शुंग ने संस्कृत व्याकरणाचार्य पाणिनि के अनुयायी पतंजलि का संरक्षण किया।
- According to the Puranas, his reign lasted for 36 years. He died in 151 BC. / पुराणों के अनुसार उसका शासन 36 वर्षों तक चला और उसकी मृत्यु 151 ईसा पूर्व में हुई।

- **Pushyamitra's son who succeeded him to the throne.** / पुष्यमित्र का पुत्र जिसने उसे सिंहासन पर उत्तराधिकार किया।
- **His reign lasted from about 149 BC to 141 BC.** / उसका शासन लगभग 149 ईसा पूर्व से 141 ईसा पूर्व तक चला।
- **By this time, Vidarbha broke away from the empire.** / इस समय तक विदर्भ साम्राज्य से अलग हो गया।
- **Agnimitra is the hero of Kalidasa's poem Malavikagnimitram.** / अग्निमित्र कालिदास की रचना मालविकाग्निमित्रम् का नायक है।
- **His son Vasumitra succeeded him as king.** / उसके बाद उसका पुत्र वसुमित्र राजा बना।

Agnimitra
(149 BC to 141 BC)



Shunga Dynasty

- The last Sunga king was Devabhuti. He was preceded by Bhagabhadra. / शुंग वंश का अंतिम शासक देवभूति था। उसके पहले भगभद्र शासक था।
- Devabhuti was killed by his own minister, Vasudeva Kanva in around 73 BC. This established the Kanva dynasty at Magadha from 73 to 28 BC. / देवभूति की हत्या लगभग 73 ईसा पूर्व में उसके मंत्री वसुदेव कण्व ने की। इसके साथ ही 73 से 28 ईसा पूर्व तक मगध में कण्व वंश की स्थापना हुई।
- Bronze coin of the Sunga period, A copper coin of 1/4 karshapana of Ujjain in Malwa. / शुंग काल के कांस्य सिक्के, उज्जैन (मालवा) के 1/4 करषापण मूल्य के तांबे के सिक्के प्रसिद्ध हैं।



Kanvas (73 BC – 28 BC)

- As per the Puranas, there were four kings of the Kanva dynasty namely, Vasudeva, Bhumimitra, Narayana and Susarman. / पुराणों के अनुसार कण्व वंश में चार शासक हुए – वसुदेव, भूमिमित्र, नारायण और सुषर्मण।
- The Kanvas were Brahmins. / कण्व ब्राह्मण थे।
- The Magadha Empire had diminished by this time considerably. / इस समय तक मगध साम्राज्य काफी कमजोर हो चुका था।

Kanvas (73 BC – 28 BC)

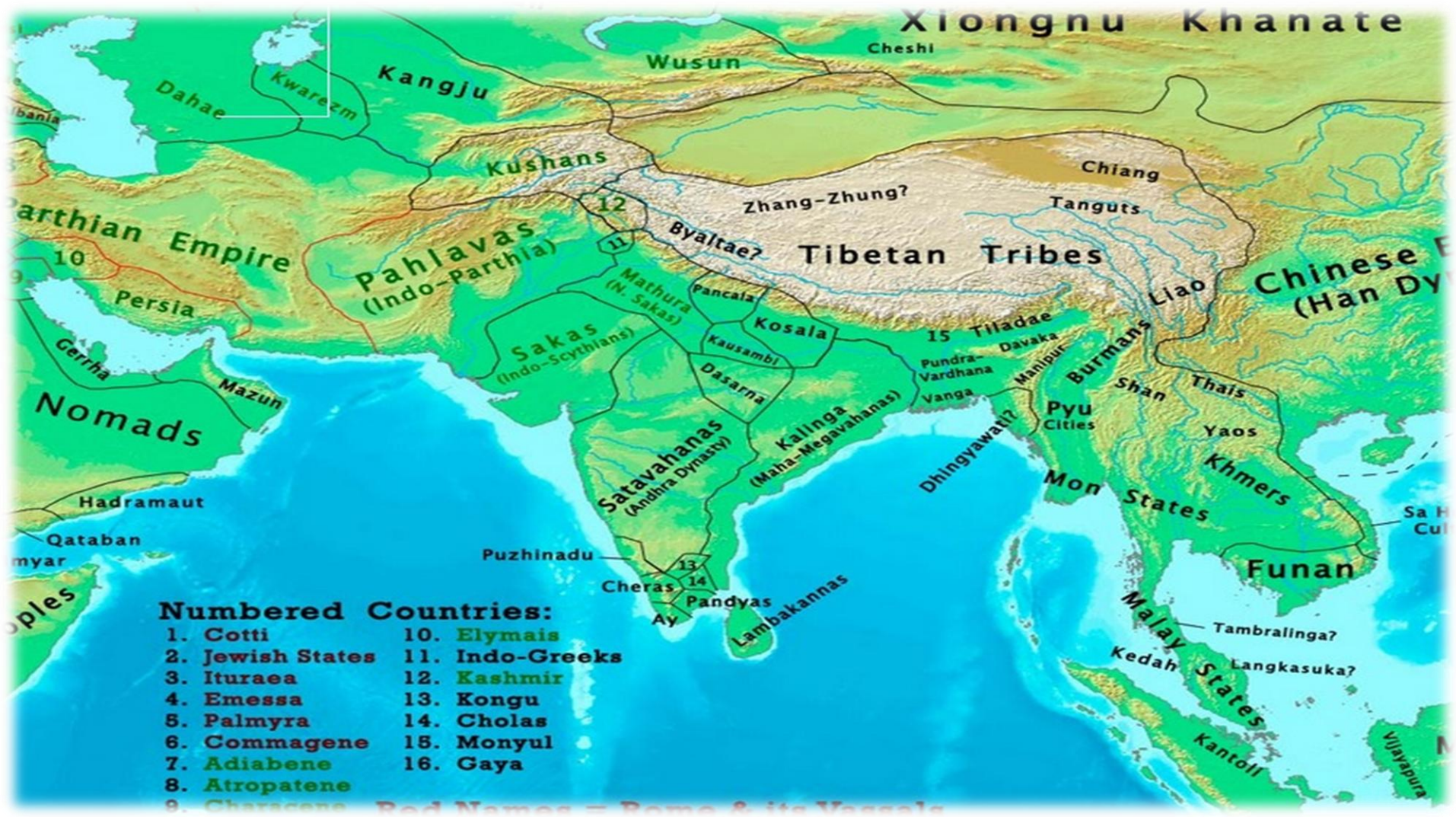
- Northwest region was under the Greeks and parts of the Gangetic plains were under different rulers. / उत्तर-पश्चिम क्षेत्र यूनानियों के अधीन था और गंगा के मैदान के कई हिस्सों पर अलग-अलग शासकों का अधिकार था।
- The last Kanva king Susarman was killed by the Satavahana (Andhra) king. / कण्व वंश का अंतिम शासक सुषर्मण सातवाहन (आंध्र) शासक द्वारा मारा गया।

Cheti / Chedi Dynasty

- The Cheti or Chedi dynasty emerged in Kalinga in the 1st century BC. / चेटी या चेदि वंश की उत्पत्ति 1वीं शताब्दी ईसा पूर्व में कलिंग में हुई।
- The Hathigumpha inscription situated near Bhubaneswar gives information about it. / इसके बारे में जानकारी भुवनेश्वर के पास स्थित हाथीगुंफा शिलालेख से मिलती है।
- This inscription was engraved by king Kharavela who was the third Cheti king. / यह शिलालेख तीसरे चेटी शासक खरवेल द्वारा खुदवाया गया था।
- Kharavela was a follower of Jainism. / खरवेल जैन धर्म का अनुयायी था।
- Other names of this dynasty are Cheta or Chetavamsa, and Mahameghavahana. / इस वंश के अन्य नाम चेट, चेटवंश तथा महामेघवाहन हैं।

Hun Dynasty (हूण वंश)





Gupta Dynasty

- The Gupta Dynasty ruled the mid-to-late 3rd century (approximately) to 543 AD. Founded by Sri Gupta, the dynasty rose to fame with rulers like Chandragupta-I, Samudragupta, etc.
- गुप्त राजवंश ने तीसरी शताब्दी के मध्य से लेकर लगभग 543 ईस्वी तक शासन किया। श्री गुप्त द्वारा स्थापित, यह राजवंश चंद्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त आदि शासकों के साथ प्रसिद्धि में आया।



The Golden Age of India



Origin of Gupta Dynasty / गुप्त वंश की उत्पत्ति

- The Gupta Empire rose to prominence in 320 AD and spread to large parts of northern India, central and small parts of southern India. / गुप्त साम्राज्य 320 ईस्वी में प्रमुखता से उभरा और इसने उत्तरी भारत के बड़े भाग, मध्य भारत तथा दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों तक विस्तार किया।
- The founder of the Gupta dynasty is Sri Gupta. / गुप्त वंश के संस्थापक श्रीगुप्त थे।
- The original homeland of the Guptas is not known for certain. But they might have originated from Bengal. Some scholars think they are from Prayaga (Allahabad in UP). / गुप्तों का मूल निवास निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है। माना जाता है कि वे बंगाल से उत्पन्न हुए। कुछ विद्वान उन्हें प्रयाग (उत्तर प्रदेश का इलाहाबाद) से मानते हैं।
- They are thought to be either Brahmins or Vaishyas./ उन्हें ब्राह्मण या वैश्य माना जाता है।
- Son of Sri Gupta was Ghatotkacha, Took the title of 'Maharaja' / श्रीगुप्त का पुत्र घटोत्कच था, जिसने 'महाराजा' की उपाधि धारण की।

Origin of Gupta Dynasty / गुप्त वंश की उत्पत्ति

According to some historians : Guptas were/ कुछ इतिहासकारों के अनुसार : गुप्त थे

- Vaisya – Romilla Thapar / Ramsharan Sharma/ रो मला थापर/रामशरण शर्मा
- Kshtriya – R C Majumdar / आरसी मजूमदार
- Brahman – Hemchandra Rai Chaudhary/ हेमचंद्र राय चौधरी
- Sudra - Kashiprasad Jaiswal/ काशीप्रसाद जायसवाल

We know from / हमें जानकारी मिलती है ?



- Contemporary literary works like the Devichandraguptam and the Mudhrakshasam written by Visakadatta provide information regarding the rise of the Guptas. / विशाखदत्त द्वारा रचित देवीचंद्रगुप्तम और मुद्राराक्षसम जैसे समकालीन साहित्यिक ग्रंथ गुप्तों के उदय की जानकारी देते हैं।
- The Chinese traveler Fahien, who visited India during the reign of Chandragupta II, has left a valuable account of the social, economic and religious conditions of the Gupta empire./ चीनी यात्री फाह्यान, जो चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में भारत आए थे, ने गुप्त साम्राज्य की सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक दशा का मूल्यवान विवरण छोड़ा।



We know from / हमें जानकारी मिलती है ?

- **Apart from these literary sources, there are inscriptions like the Meherauli Iron Pillar Inscription and the Allahabad Pillar inscription. / इन साहित्यिक स्रोतों के अलावा, मेहरौली लौह स्तंभ शिलालेख और इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख जैसे अभिलेख भी उपलब्ध हैं।**
- **The coins issued by Gupta kings contain legends and figures. These coins provide interesting details about the titles and sacrifices performed by the Gupta monarchs. / गुप्त राजाओं द्वारा जारी सिक्कों पर लेख और चित्र अंकित हैं। ये सिक्के गुप्त सम्राटों की उपाधियों और किए गए यज्ञों की जानकारी देते हैं।**

Sri Gupta (240-280)

- The founder of the Gupta dynasty was Sri Gupta. / गुप्त वंश के संस्थापक श्रीगुप्त थे।
- He was succeeded by Ghatotkacha. / उनके उत्तराधिकारी घटोत्कच बने।
- These two were called Maharajas./ इन्हें 'महाराजा' कहा जाता था।



Chandragupta I (320-330 A.D.)

- **Chandragupta was a powerful Gupta ruler who had waged many battles to attain his title of 'Maharajadhiraja'.** / चंद्रगुप्त एक शक्तिशाली गुप्त शासक थे, जिन्होंने 'महाराजाधिराज' की उपाधि प्राप्त करने के लिए अनेक युद्ध किए।
- **He married a Lichhavi princess Kumaradevi, which began the eminence of the Gupta empire.** / उन्होंने लिच्छवि राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया, जिससे गुप्त साम्राज्य की प्रतिष्ठा प्रारम्भ हुई।
- **The Mehrauli iron pillar inscriptions has mention of his extensive conquests.** / मेहरौली लौह स्तंभ शिलालेख में उनके व्यापक विजयों का उल्लेख है।
- **He is considered as the real founder of the Gupta era.** / उन्हें गुप्त संवत् का संस्थापक माना जाता है।



Samudragupta (330-380 A.D.)

- He is also known as “Indian Napoleon”. He was the greatest of the rulers of Gupta dynasty. / उन्हें “भारतीय नेपोलियन” भी कहा जाता है। वे गुप्त वंश के सबसे महान शासक थे।
- The Allahabad Pillar inscription contains details of his military conquest. / इलाहाबाद स्तंभ शिलालेख में उनके सैन्य विजयों का विवरण मिलता है।
- He also performed Ashwamedha sacrifices after his military victories. / उन्होंने अपनी सैन्य विजयों के बाद अश्वमेध यज्ञ भी किए।



Samudragupta (330-380 A.D.)



- His greatest achievement was political unification of India as a formidable force. / उनका सबसे बड़ा योगदान भारत का राजनीतिक एकीकरण था।
- A Chinese source tells that, the ruler of Sri Lanka, Meghvarman sought permission of Samudragupta to build a Buddhist temple at Bodh Gaya. / एक चीनी स्रोत से ज्ञात होता है कि श्रीलंका के राजा मेघवर्मन ने बोधगया में बौद्ध मंदिर निर्माण की अनुमति समुद्रगुप्त से मांगी थी।

Samudragupta (330-380 A.D.)



- Samudragupta was called by different names, one of them was 'Kaviraja' because of his ability to compose verses. Certain coins show him with a Veena./ समुद्रगुप्त को अनेक उपाधियाँ दी गईं। उनमें से एक थी 'कविराज', क्योंकि वे कविता रचने में दक्ष थे। कुछ सिक्कों पर उन्हें वीणा बजाते हुए दर्शाया गया है।
- Samudragupta was a follower of Vaishnavism. However, he also patronised the great Buddhist scholar Vasubandhu. / समुद्रगुप्त वैष्णव धर्म के अनुयायी थे, किंतु उन्होंने महान बौद्ध विद्वान वसुबंधु का भी संरक्षण किया।

Samudragupta (330-380 A.D.)



Prayag Prashasti inscription:/ प्रयाग प्रशस्ति शिलालेख

- **Initially it was in Kaushambi , later King Akbar brought it to Allahabad (Prayagraj).**
- शुरु में यह कौशाम्बी में था, बाद में राजा अकबर इसे इलाहाबाद (प्रयागराज) ले आए।
- **Harisen was considered to be the author of this inscription/ हरिसे को इस शिलालेख का लेखक माना जाता था**

Samudragupta 6 Gold Coins / समुद्रगुप्त के 6 स्वर्ण सिक्के

- Garunadhvaja / गरुड़ध्वज
- Archer Type / धनुर्धारी प्रकार
- Battle Axe / युद्ध-कुल्हाड़ी
- Tiger Slayer / व्याघ्रवधक
- Ashvamedha / अश्वमेध
- Lutanist / वीणावादक



Satavahana Dynasty

- Simuka founded the dynasty. / इस वंश की स्थापना सिमुक ने की थी।
- The Satavahana rule is believed to have started around the third century BC, in 235 BC and lasted until the second century AD. / सातवाहन शासन की शुरुआत तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व (235 ई.पू.) मानी जाती है, जो दूसरी शताब्दी ईस्वी तक चला।
- Some experts believe their rule started in the first century BC only. / कुछ विद्वानों का मानना है कि उनका शासन पहली शताब्दी ईसा पूर्व से प्रारंभ हुआ।
- The Satavahana kingdom chiefly comprised of modern-day Andhra Pradesh, Telangana and Maharashtra. At times, their rule also included parts of Karnataka, Gujarat and Madhya Pradesh. / सातवाहन साम्राज्य में मुख्यतः आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और महाराष्ट्र शामिल थे। समय-समय पर इसमें कर्नाटक, गुजरात और मध्य प्रदेश के हिस्से भी सम्मिलित थे।



Satavahana Dynasty



Satavahana Dynasty

- Their capital cities varied at different times. Pratihasthana (Paithan) and Amaravati were its capitals. / उनकी राजधानी समय-समय पर बदलती रही। प्रतिष्ठान (पैठण) और अमरावती इसकी राजधानियाँ थीं।
- They were the first native Indian rulers to issue their own coins with the portraits of the rulers. This practice was started by Gautamiputra Satakarni who derived the practice from the Western Satraps after defeating them. / वे पहले स्वदेशी भारतीय शासक थे जिन्होंने अपने शासकों के चित्रयुक्त सिक्के जारी किए। यह प्रथा गौतमिपुत्र शातकर्णि ने प्रारम्भ की, जिन्होंने पश्चिमी क्षत्रपों को हराने के बाद यह परंपरा अपनाई।
- The coin legends were in Prakrit language. Some reverse coin legends are in Telugu, Tamil and Kannada. / सिक्कों पर अंकित लेख प्राकृत भाषा में थे। कुछ सिक्कों के विपरीत भाग पर तेलुगु, तमिल और कन्नड़ भाषा भी पाई जाती है।

Satavahana Dynasty

- They patronised Prakrit more than Sanskrit. / उन्होंने संस्कृत की अपेक्षा प्राकृत भाषा को अधिक संरक्षण दिया।
- They supported both Buddhism and Brahminism although they were Hindus and claimed Brahminical status. / यद्यपि वे हिंदू थे और ब्राह्मणिक दर्जा दावा करते थे, फिर भी उन्होंने बौद्ध धर्म और ब्राह्मण धर्म दोनों का समर्थन किया।
- They successfully defended their territories against foreign invaders and had many on-going battles with the Sakas (Western Satraps). / उन्होंने विदेशी आक्रमणकारियों से अपने क्षेत्रों की रक्षा की और शक (पश्चिमी क्षत्रप) से कई युद्ध किए।



Vijayanagar Empire

The Vijayanagara Empire was based in the Deccan Plateau region in South India. It was established in 1336 by the brothers Harihara I and Bukka Raya I of Sangama Dynasty, members of a pastoralist cowherd community that claimed Yadava lineage.

विजयनगर साम्राज्य दक्षिण भारत के दक्कन पठार क्षेत्र में स्थित था। इसकी स्थापना 1336 ई. में संगम वंश के हरिहर प्रथम और उनके भाई बुक्क राय प्रथम ने की थी, जो यदुवंशी होने का दावा करने वाले गोपालक समुदाय से थे।



- The Vijayanagar Empire was founded in 1336 AD by Harihar I and his brother Bukka Raya I in Deccan in the wake of the rebellions against Tughluq rule. / विजयनगर साम्राज्य की स्थापना 1336 ई. में हरिहर प्रथम और उनके भाई बुक्क राय प्रथम ने तुगलक शासन के विरुद्ध विद्रोहों के दौरान दक्कन में की थी।
- The empire is named after its capital city of Vijayanagar. The ruins of this city which surround modern World Heritage site Hampi can be found in modern Karnataka, India. / साम्राज्य का नाम उसकी राजधानी विजयनगर पर पड़ा। इसका खंडहर आधुनिक विश्व धरोहर स्थल हम्पी (कर्नाटक) में स्थित है।
- Although the empire continued to exist till 1646 AD, it lost its importance in 1565 AD after a key military defeat (The battle of Talikota) by the Deccan Sultanates. / यद्यपि यह साम्राज्य 1646 ई. तक अस्तित्व में रहा, किन्तु 1565 ई. में दक्कन सुल्तानों द्वारा तालिकोट की लड़ाई में पराजय के बाद इसकी महत्ता घट गई।

The empire extended over the southern part of India which included the territories of Trichinopally, Mysore, Kanara, Chingalpet and Kanchivaram. It was on the south bank of Tungabhadra River.

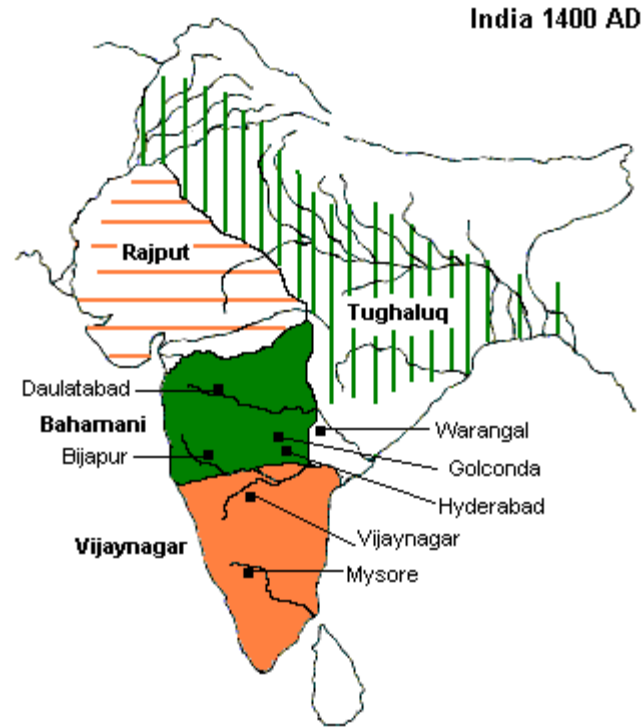
यह साम्राज्य दक्षिण भारत में फैला हुआ था, जिसमें त्रिचनापल्ली, मैसूर, कन्नड़, चेंगलपटूर और कांचीवरम शामिल थे। यह तुंगभद्रा नदी के दक्षिणी तट पर स्थित था।

The empire was always at war with Bahamani kingdom and other Muslim rulers of northern Deccan, collectively referred as Deccan sultanates.

यह साम्राज्य बहमनी राज्य और उत्तर दक्कन के अन्य मुस्लिम शासकों (जिन्हें सामूहिक रूप से दक्कन सुल्तान कहा जाता है) से निरंतर युद्धरत था।

There were four dynasties
which ruled over
Vijayanagar-
Sangama Dynasty, Saluva
Dynasty, Tuluva Dynasty
and Araividu Dynasty.

विजयनगर पर चार राजवंशों ने
शासन किया-
संगम वंश, सलुवा वंश, तुलुवा वंश
और अरै वडु वंश।



Sangama Dynasty (1334 AD to 1485 AD)

- It was the first dynasty to rule over the Vijaynagar empire. The founders of the empire, Harihar I and Bukka belonged to this dynasty. It ruled from 1334 AD to 1485 AD.
- यह विजयनगर साम्राज्य पर शासन करने वाला पहला राजवंश था। साम्राज्य के संस्थापक हरिहर प्रथम और बुक्का इसी वंश के थे। इसने 1334 ई. से 1485 ई. तक शासन किया।

Saluva Dynasty (1485 to 1505 AD)

- This dynasty succeeded Sangama dynasty as the second dynasty of the empire. It ruled from 1485 to 1505 AD. They ruled over almost the whole South India.
- यह राजवंश संगम वंश के बाद साम्राज्य का दूसरा राजवंश बना। इसने 1485 ई. से 1505 ई. तक शासन किया। इसने लगभग पूरे दक्षिण भारत पर शासन किया।

Tuluva Dynasty(1491 AD to 1570 AD)

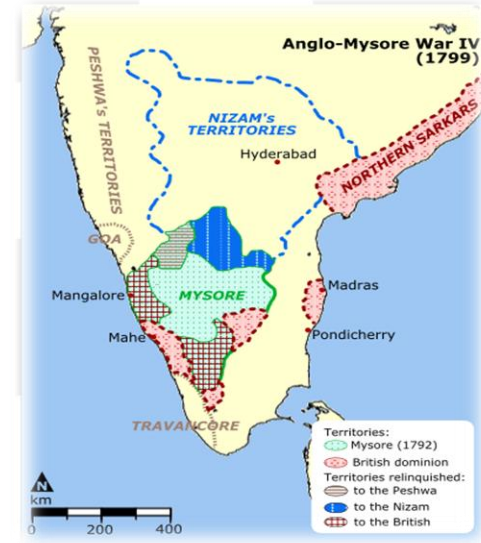
- This was the third dynasty which ruled Vijayanagar Empire. It ruled from Tuluva dynasty. The most famous king of Vijayanagar empire, Krishna Deva Raya belonged to this dynasty. It ruled from 1491 AD to 1570 AD.
- यह विजयनगर साम्राज्य पर शासन करने वाला तीसरा राजवंश था। इसने तुलुव राजवंश से शासन किया। विजयनगर साम्राज्य के सबसे प्रसिद्ध राजा, कृष्णदेव राय इसी राजवंश के थे। इसने 1491 ई. से 1570 ई. तक शासन किया।

Aravidu Dynasty (Lower importance till 1646 AD)

- It was the fourth and last Hindu dynasty to rule Vijayanagar kingdom in South India. Its founder was Tirumala Deva Raya.
- यह दक्षिण भारत में विजयनगर साम्राज्य पर शासन करने वाला चौथा और अंतिम हिंदू राजवंश था। इसके संस्थापक तिरुमला देव राय थे।

Wadiyar Dynasty

- The Wadiyar dynasty was a Hindu Yaduvanshi dynasty in Indian subcontinent that ruled the Kingdom of Mysore from 1399 to 1950, with a brief interruption in the late 1700s. / वाडियार राजवंश भारतीय उपमहाद्वीप में एक हिंदू यदुवंशी राजवंश था जिसने 1399 से 1950 तक मैसूर साम्राज्य पर शासन किया, जिसमें 1700 के दशक के अंत में एक संक्षिप्त विराम भी शामिल था।
- The kingdom was incorporated into the Dominion of India after its independence from British rule./ ब्रिटिश शासन से स्वतंत्रता के बाद यह राज्य भारत में शामिल हो गया।



Wadiyar Dynasty

- The dynasty was established in 1399 by Adi Yaduraya Wodeyar. He ruled Mysore under the Vijayanagara Empire until 1423.
- इस राजवंश की स्थापना 1399 में आदि यदुरया वोडेयार ने की थी। उन्होंने 1423 तक विजयनगर साम्राज्य के अधीन मैसूर पर शासन किया।
- After Yaduraya Wodeyar, the Mysore kingdom was succeeded by the Wadiyar rulers. The kingdom remained fairly small during this early period and was a part of the Vijayanagara Empire. After the fall of the Vijayanagara Empire in 1565, the Kingdom of Mysore became independent and remained so until 1799.
- यदुरया वोडेयार के बाद, मैसूर साम्राज्य पर वाडियार शासकों का शासन आया। इस प्रारंभिक काल में यह राज्य काफी छोटा रहा और विजयनगर साम्राज्य का एक हिस्सा था। 1565 में विजयनगर साम्राज्य के पतन के बाद, मैसूर साम्राज्य स्वतंत्र हो गया और 1799 तक स्वतंत्र रहा।

Wadiyar Dynasty

- During the reign of Krishnaraja Wadiyar III (1799–1868), the region came under the control of the British Empire. His successors changed the English spelling of their royal name to Wadiyar and took the title of Bahadur. The last two monarchs of the dynasty, Krishnaraja Wadiyar IV and Jayachamarajendra Wadiyar also accepted the British decoration Knight Grand Cross of The Most Excellent Order of the British Empire(GBE).
- कृष्णराज वाडियार तृतीय (1799-1868) के शासनकाल के दौरान, यह क्षेत्र ब्रिटिश साम्राज्य के नियंत्रण में आ गया। उनके उत्तराधिकारियों ने अपने शाही नाम की अंग्रेजी वर्तनी बदलकर वाडियार कर ली और बहादुर की उपाधि धारण की। राजवंश के अंतिम दो राजाओं, कृष्णराज वाडियार चतुर्थ और जयचामाराजेंद्र वाडियार ने ब्रिटिश सम्मान नाइट ग्रेंड क्रॉस ऑफ़ द मोस्ट एक्सेलेंट ऑर्डर ऑफ़ द ब्रिटिश एम्पायर (GBE) भी स्वीकार किया।

Wadiyar Dynasty

- The Vijayanagara Empire disintegrated in 1565. The power vacuum created soon after was exploited by Raja Wadiyar (ruled 1578-1617). He expanded the borders of the Mysore kingdom and in 1610 changed the capital city from Mysore to Srirangapatna; a rare island formed by the river Kaveri, which provided natural protection against military attacks.
- वजयनगर साम्राज्य 1565 में वघटित हो गया। इसके तुरंत बाद पैदा हुई सत्ता की शून्यता का फायदा राजा वा ड्यार (शासन 1578-1617) ने उठाया। उन्होंने मैसूर राज्य की सीमाओं का वस्तार किया और 1610 में राजधानी शहर को मैसूर से श्रीरंगपटना में बदल दिया; कावेरी नदी द्वारा निर्मित एक दुर्लभ द्वीप, जो सैन्य हमलों के खिलाफ प्राकृतिक सुरक्षा प्रदान करता था।

Wadiyar Dynasty

- Later famous rulers of the dynasty included Kanthirava Narasaraja I (ruled 1638–1659), who expanded the frontiers of the Mysore kingdom to Trichy in Tamil Nadu. The dynasty reached its peak under Chikka Devaraja (ruled 1673–1704), who reformed the administration of the empire by dividing it into 18 departments (called Chavadis) and he also introduced a coherent system of taxation.
- राजवंश के बाद के प्रसिद्ध शासकों में कंथिरवा नरसाराज प्रथम (शासनकाल 1638-1659) शामिल थे, जिन्होंने मैसूर साम्राज्य की सीमाओं का विस्तार तमिलनाडु के त्रिची तक किया। यह राजवंश चिक्का देवराज (शासनकाल 1673-1704) के शासनकाल में अपने चरम पर पहुँचा, जिन्होंने साम्राज्य के प्रशासन को 18 विभागों (जिन्हें चावड़ी कहा जाता था) में विभाजित करके सुधार किया और उन्होंने कराधान की एक सुसंगत प्रणाली भी शुरू की।

Wadiyar Dynasty

- From 1760 to 1799, the rule of the dynasty was essentially nominal, with real power in the hands of the dalwai, or commanders-in-chief, Hyder Ali and his son Tipu Sultan, who expanded the kingdom aggressively, but clashed with the East India Company. After Tipu Sultan was killed by the British in the Battle of Srirangapatna in 1799, the Wadiyars were restored to a reduced kingdom.
- 1760 से 1799 तक, राजवंश का शासन मूलतः नाममात्र का था, और वास्तविक शक्ति दलवाई या सेनापति हैदर अली और उनके पुत्र टीपू सुल्तान के हाथों में थी, जिन्होंने राज्य का आक्रामक विस्तार किया, लेकिन ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ उनका टकराव भी हुआ। 1799 में श्रीरंगपट्टनम के युद्ध में अंग्रेजों द्वारा टीपू सुल्तान की हत्या के बाद, वाडियारों को एक छोटा राज्य वापस मिल गया।

Haider Ali

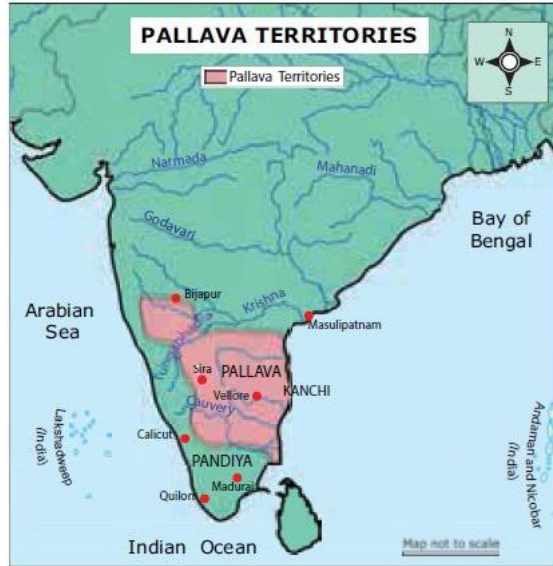
- Hyder Ali , (1720 – 7 December 1782) was the Sultan ruler of the Kingdom of Mysore in southern India.
- हैदर अली (1720 - 7 दिसंबर 1782) दक्षिण भारत में मैसूर साम्राज्य के सुल्तान शासक थे।
- Born as Sayyid wal Sharif Hyder Ali Khan, he distinguished himself militarily, eventually drawing the attention of Mysore's rulers.
- सैय्यद वल शरीफ हैदर अली खान के रूप में जन्मे, उन्होंने सैन्य रूप से खुद को प्रतिष्ठित किया, अंततः मैसूर के शासकों का ध्यान आकर्षित किया।



Haider Ali

- Rising to the post of Dalavayi (commander-in-chief) to Krishnaraja Wodeyar II, he came to dominate the titular monarch and the Mysore government. He became the de facto ruler of Mysore as Sarvadhikari (Chief Minister) by 1761.
- कृष्णराज वोडेयार द्वितीय के दलवयी (सेनापति) के पद पर आसीन होकर, उन्होंने नाममात्र के सम्राट और मैसूर सरकार पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। 1761 तक वे सर्वाधिकारी (मुख्यमंत्री) के रूप में मैसूर के वास्तविक शासक बन गए।
- He offered strong resistance against the military advances of the British East India Company during the First and Second Anglo-Mysore Wars, and he was the innovator of military use of the iron-cased Mysorean rockets. He also significantly developed Mysore's economy.
- उन्होंने प्रथम और द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्धों के दौरान ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सैन्य प्रगति का कड़ा प्रतिरोध किया और वे लौह आवरण वाले मैसूरी रॉकेटों के सैन्य उपयोग के प्रवर्तक थे। उन्होंने मैसूर की अर्थव्यवस्था का भी महत्वपूर्ण विकास किया।

Pallav Dynasty **(275BCE- 897AD)**



- The Pallava dynasty was a dynasty of ancient South India. They established their kingdom in Kanchipuram in the 4th century and ruled the Tamil and Telugu regions for approximately 600 years.
- पल्लव राजवंश प्राचीन दक्षिण भारत का एक राजवंश था। चौथी शताब्दी में इसने कांचीपुरम में राज्य स्थापित किया और लगभग 600 वर्ष तमिल और तेलुगु क्षेत्र में राज्य किया।
- Bodhidharma, who spread meditation to China, belonged to this dynasty. These kings considered themselves Kshatriyas.
- बोधिधर्म इसी राजवंश का था जिसने ध्यान योग को चीन में फैलाया। यह राजा अपने आप को क्षत्रिय मानते थे।

- The outline of the early history of the Pallavas is unclear. It is believed that the Pallavas emerged after the Satavahanas.
- पल्लवों के प्रारंभिक इतिहास की रूपरेखा स्पष्ट नहीं है। यह माना जाता है कि पल्लवों का उदय सातवाहनों के बाद हुआ था।
- The Pallavas' domain was southern Andhra and northern Tamil Nadu, with Kanchi as their capital. The authentic history of the Pallavas is available only around the sixth century AD, from which time their kingdom developed rapidly.
- पल्लवों का क्षेत्र दक्षिणी आंध्र और उत्तरी तमिलनाडु था, जिसकी राजधानी कांची थी। पल्लवों का प्रामाणिक इतिहास केवल छठी शताब्दी ईस्वी के आसपास उपलब्ध है, जिस समय से उनका राज्य तेजी से विकसित हुआ।
- The historical ruler of this region can be considered to be Simha Vishnu. He was a very powerful ruler who assumed the title of Avanisimha. He conquered the entire Chola region and expanded his kingdom up to the Kaveri. He was a Vaishnavite.
- इस क्षेत्र के ऐतिहासिक शासक सिंह वष्णु को माना जा सकता है। वह एक बहुत शक्तिशाली शासक था जिसने अवनि सिंह की उपाधि धारण की थी। उसने पूरे चोल क्षेत्र पर वजय प्राप्त की और कावेरी तक अपने राज्य का विस्तार किया। वह एक वैष्णव थे



Name of the Ruler / Period of Reign



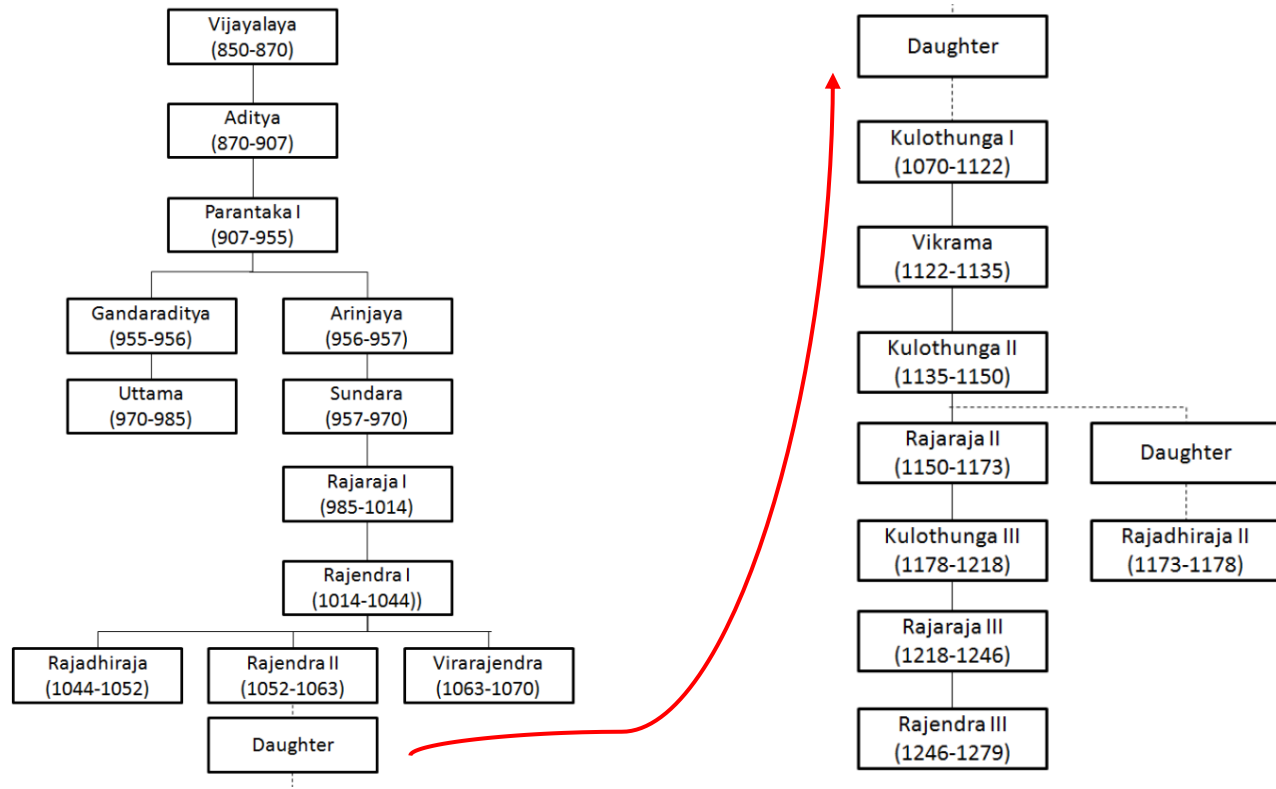
- Shivaskanda Varman –
- Vishnugopa –
- Simhavishnu – (575–600 CE)
- Mahendravarman I – (600–630 CE)
- Narasimhavarman I – (630–668 CE)
- Mahendravarman II – (668–670 CE)
- Parameshvaravarman I – (670–695 CE)
- Narasimhavarman II – (695–720 CE)
- Parameshvaravarman II – (720–731 CE)
- Nandivarman II – (731–795 CE)
- Dantivarman – (796–847 CE)
- Nandivarman III – (847–869 CE)
- Nripatunga Varman – (870–879 CE)
- Aparajita – (879–897 CE)

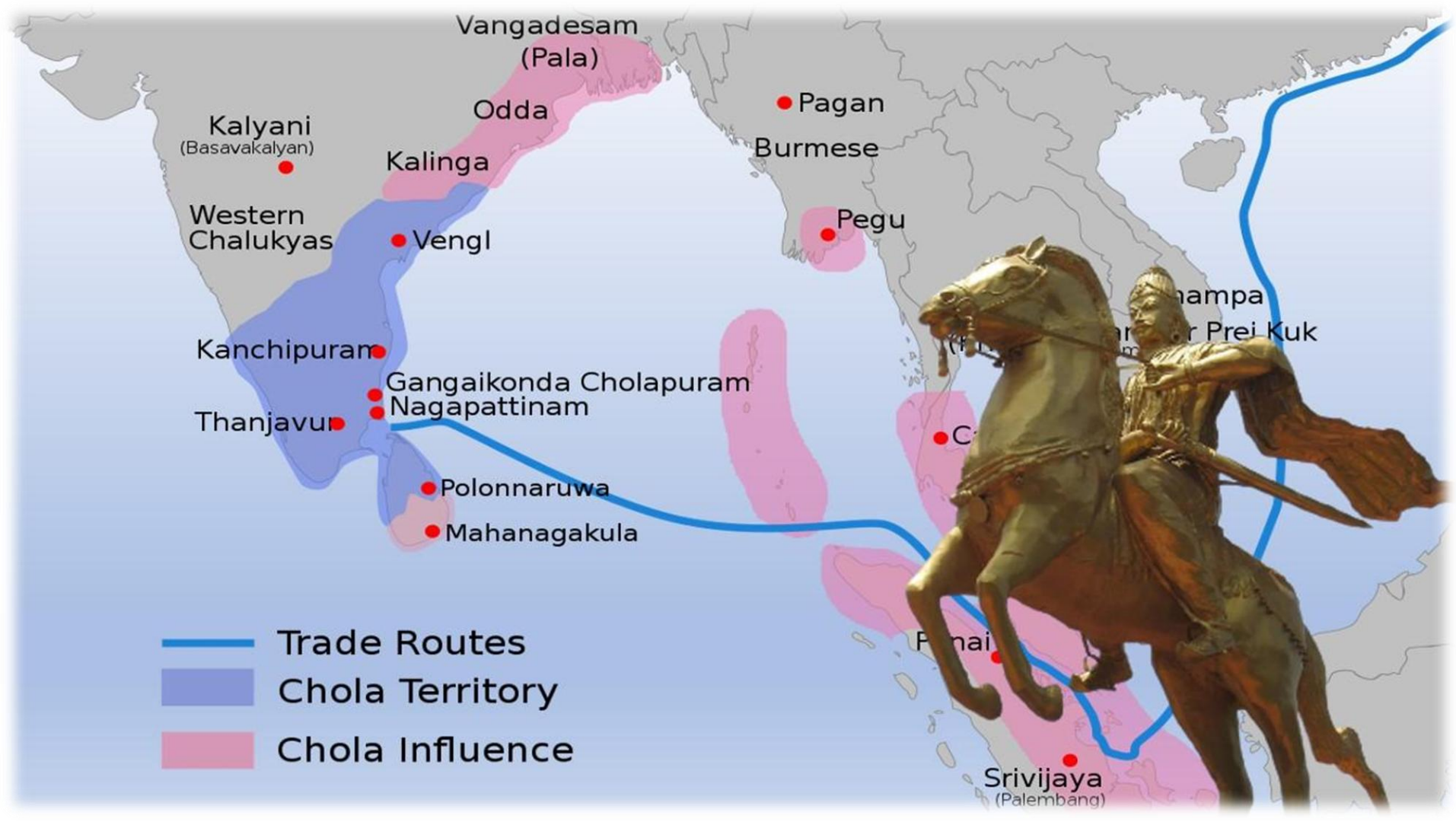
- **Initial information about the Pallava rulers of Kanchi is obtained from the Prayaga Prashasti and the travel account of Hiuen Tsang / कांची के पल्लव शासकों के विषय में प्रारंभिक जानकारी प्रयाग प्रशस्ति एवं ह्वेनसांग के यात्रा विवरण से मिलती है।**
- **Shiva Skandavarman was probably the earliest ruler of the Pallava dynasty / शिव स्कन्दवर्मन संभवतः प्रारम्भिक पल्लववंशी शासक था।**
- **He made Kanchi his capital / उसने कांची को अपनी राजधानी बनाया।**
- **The history of the rise of the Pallava dynasty of Kanchi actually begins with Simhavarman (550–575 CE) / कांची के पल्लव राजवंश के उत्कर्ष का इतिहास वस्तुतः सिंहवर्मन (550–575 ई.) के समय से प्रारंभ होता है।**

- **However, the tradition of the great Pallavas starts with his son Simhavishnu (575–600 CE) / जबकि महान पल्लवों की परम्परा उसके पुत्र सिंहविष्णु (575–600 ई.) से प्रारंभ होती है।**
- **Simhavarman's son and successor Simhavishnu is regarded as the real founder of the Pallava dynasty / सिंहवर्मन का पुत्र तथा उत्तराधिकारी सिंहविष्णु पल्लव वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।**
- **Simhavishnu assumed the title Avanisimha (Lion of the Earth) / सिंहविष्णु ने अवनिसिंह (पृथ्वी का सिंह) नामक उपाधि धारण की थी।**
- **Simhavishnu was a devotee of Vishnu / सिंहविष्णु विष्णु का उपासक था।**

- During the reign of Simhavishnu, the Varaha Temple was constructed at Mamallapuram (Mahabalipuram) / सिंहविष्णु के शासन काल में मामल्लपुरम् (महाबलीपूरम्) में वाराहमंदिर का निर्माण हुआ।
- In the court of Simhavishnu, the great poet Bharavi, the author of the epic Kiratarjuniya, resided / सिंहविष्णु के दरबार में किरातार्जुनीयम् नामक महाकाव्य के रचयिता महाकवि भारवि रहते थे।
- After Simhavishnu, Mahendravarman I ascended the throne / सिंहविष्णु के बाद महेन्द्रवर्मन प्रथम राजगद्दी पर बैठा।
- Mahendravarman I assumed many titles such as Mattavilasa, Vichitrachitta, Gunabhara, and Shutramalla / महेन्द्रवर्मन प्रथम ने मत्तविलास, विचित्रचित्त, गुणभर तथा शुत्रमल्ल जैसी अनेक उपाधियाँ धारण की।

- **Initially, Mahendravarman I embraced Jainism, but under the influence of Appar, he soon adopted Shaivism** / महेन्द्रवर्मन प्रथम ने पहले जैन धर्म को अंगीकार किया था लेकिन अप्पार के प्रभाव में इसे छोड़कर शीघ्र उसने शैव मत को अपना लिया।
- **Mahendravarman I built many cave temples** / महेन्द्रवर्मन प्रथम ने अनेक गुफा मंदिरों का निर्माण करवाया।
- **He was the first to popularize the art of cutting stone rocks to build temples** / महेन्द्रवर्मन ने ही सबसे पहले पाषाण खड़ों को काटकर मंदिर बनवाने की कला का प्रचार किया।
- **Mahendravarman I constructed monolithic temples dedicated to Brahma, Ishvara, and Vishnu** / महेन्द्रवर्मन प्रथम ने ब्रह्मा, ईश्वर तथा विष्णु के एकात्मक मंदिरों का निर्माण करवाया।









Thank
you

